पाठ – 38A संचार की भाषा

मुख्य विषय

संचार का मुख्य साधन भाषा है। बिना भाषा के संचार निर्जीव है। समाचारपत्रों के बारे में तो यह बात एकदम सही है, क्योंकि भाषा में ही तो अख़बार छपते हैं। रेडियो और दूरदर्शन में भी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिसे वाचिक भाषा कहते हैं। पाठक वर्ग बदलने पर भाषा का स्वरूप बदल जाता है, उसी तरह विषय के अनुसार भाषा में परिवर्तन आ जाता है। इस पाठ में भाषा के प्रकार, भाषा का विकास, समाचारपत्रों की भाषा, प्रसारण माध्यमों की भाषा, संचार माध्यमों की वाक्य संरचना, समाचार-वाचन, अनुवाद की छाया आदि विषयों के बारे में विस्तार से बताया गया है।

मुख्य बिंदु

1. **भाषा के प्रकार** : समाचारपत्रों की भाषा आम पाठक की भाषा होती है। मज़दूरों के लिए छपने वाली किसी पत्रिका और विश्वविद्यालय के अध्यापकों के लिए छपने वाली पत्रिका का भाषा-स्तर निश्चय ही अलग-अलग होगा। संगीत अथवा साहित्य के समाचारों व लेखों की भाषा अलग हो जाती है। इसी तरह आर्थिक समाचारों और लेखों में नए तरह के शब्द प्रयोग किए जाते हैं, जैसे - सोना लुढ़का, चाँदी चमकी, गेहूँ में उछाल आदि।

2. **भाषा का विकास** : हमारे यहाँ अंग्रेजों के आने से पहले सरकारी, दरबारी और अदालती कामकाज फ़ारसी और फिर उर्दू में होता था। ब्रिटिश शासन में भी भारत में अंग्रेज़ी के साथ-साथ उर्दू में काम होता रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि सारी शब्दावली फ़ारसी में और फिर अंग्रेज़ी में विकसित हुई।

3. किंतु जब स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और हिंदी में ही केंद्र तथा कुछ राज्यों में कामकाज होने लगा तो हिंदी में नए-नए शब्दों का विकास होने लगा। हमने प्रारंभ में ही लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद, विधानसभा, सचिवालय, मंत्रिमंडल, सरकार, आयोग, प्रशासन जैसे शब्द बना लिए और अब सभी भारतीय भाषाओं में यही शब्द पारिभाषिक शब्द बन चुके हैं। बाद में जैसे-जैसे नए विषय तथा नए तरह का कामकाज सामने आया, नई शब्दावली और वाक्य रचना भी विकसित होने लगी।

   संचार में हमारा लक्ष्य भाषा को सँवारना नहीं, बल्कि अपनी बात को लोगों तक पहुँचाना होता है। यह सही है कि भाषा जितनी सुगठित और मँजी हुई होगी, हमारी बात का असर भी उतना ही गहरा होगा। समाचारपत्रों के समान भाषा के विकास में रेडियो और दूरदर्शन का योगदान भी है।

4. **समाचार पत्रों की भाषा** : इसके मुख्य पहलू ये हैं कि:

   क. वर्तनी की समस्या

   - हिंदी भाषी क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों पर हिंदी के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं।
   - हिंदी भाषी क्षेत्र में अनेक बोलियाँ हैं, जिनमें अनेक असमानताएँ हैं।

- अधिकांश हिंदी भाषी पढ़ने-लिखने में तो हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करते हैं किंतु अपने परिवार के सदस्यों, सगे-संबंधियों और मित्रों से अपनी स्थानीय बोली में बात करते हैं।

- हिंदी भाषा का मानक रूप तो पूरे हिंदी क्षेत्र में एक-सा है लेकिन हिंदी की बोलियों-ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि में अंतर है।

- उच्चारण के आधार पर वर्तनी को स्वीकार करने में भी अनेक बाधाएँ हैं, क्योंकि हिंदी क्षेत्र

  इतना बड़ा है कि इसके विभिन्न भागों में शब्दों के उच्चारण में भी बहुत असमानताएँ हैं।

ख. शब्द और वाक्य प्रयोग

समाचारपत्रों में हिंदी पर्याय के साथ-साथ तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी रूप भी ज्यों के त्यों लिए जाने चाहिए। इसी तरह नई-नई खोजें होती हैं और नए तत्त्व, यंत्र या उपकरण सामने आते हैं, तो उनके नाम प्रायः उसी रूप में अपना लिए जाते हैं। समाचारपत्रों में जहाँ एक ओर शिथिल वाक्य-रचनाएँ देखने को मिलती हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी जटिल वाक्य-रचनाएँ भी देखी जा सकती हैं, जो साधारण पाठकों की समझ में नहीं आतीं। जटिल वाक्य-संरचना प्रायः संपादकीय लेखों में देखने को मिलती है।

ग. भाषा का आदर्श रूप

समाचारपत्रों का यह दायित्व है कि वे भाषा के प्रयोग में लापरवाही न बरतें। वे इस प्रकार की सरल, सुबोध और शुद्ध भाषा का प्रयोग करें, जो हिंदी को एक आदर्श रूप प्रदान कर सके।

5. **प्रसारण माध्यमों की भाषा**

- रेडियो की भाषा : रेडियो के कार्यक्रमों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि लोगों की रुचि उनमें बनी रहे। यदि भाषा जटिल और बोझिल होगी, तो कोई भी उसे ध्यान से नहीं सुनेगा। इसलिए प्रसारण की भाषा सरल और सब तरह के श्रोताओं को समझ में आने वाली होनी चाहिए। इसका सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि सरल भाषा को सामान्य तथा विद्वान, निरक्षर तथा साक्षर और बच्चे तथा बड़े समान रूप से समझ लेते हैं। उर्दू के जो शब्द हिंदी में बोलचाल के अंग बन गए हैं, उनके प्रयोग करना यथेष्ट है तथा संस्कृत के जो शब्द लंबे समय से प्रयोग में आ रहे हैं, उन्हें लेना हितकर है।

- **दूरदर्शन की भाषा** : दूरदर्शन के समाचारों में भाषा का प्रयोग अपेक्षाकृत कम और चित्रों तथा दृश्यों का उपयोग अधिक किया जाता है। इसलिए समाचार के साथ जो कुछ दिखाया जाता है, उसका वर्णन शब्दों में करना हमेशा ज़रूरी नहीं होता। इसके वाक्य छोटे, सरल होने चाहिए तथा ऐसे शब्दों का चयन किया जाना चाहिए जो सुनने में मधुर लगें। भाषा मे सहजता और सुबोधता होना ज़रूरी है। वाक्यों का वाचन करते समय अवरोध पैदा करने वाले शब्दों के स्थान पर

प्रचलित पर्यायवाची शब्द प्रयोग किए जा सकते हैं।

6. **समाचारवाचन** : वाचन का अर्थ है, जिसमें साफ, लयपूर्ण और सधे हुए स्वर, शुद्ध उच्चारण, भाषा का ज्ञान तथा समाचार पढ़ने की विशिष्ट शैली की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि प्रसारण माध्यमों में संपादकों की भूमिका गौण मानी जाती है और श्रोता और दर्शक समाचार वाचकों को ही वास्तविक समाचार प्रसारक मान बैठते हैं। इसमें मधुर आवाज़, प्रभावी वाचन, और समाचार संपादन का गुण होना आवश्यक है। लाखों-करोड़ों श्रोताओं और दर्शकों तक अपनी बात को सही-सही अर्थों में पहुँचाना समाचार वाचक का बहुत बड़ा दायित्व है। वास्तव में समाचार लेखन, संपादन और वाचन एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

7. **अनुवाद की छाया**

अनुवाद से संचार माध्यमों की भाषा दुरूह और बोझिल हो जाती है। इससे बचने के लिए लक्ष्य भाषा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरलता से खप जाएँ और भाषा में रवानी पैदा करें।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. 'आज संचार माध्यमों की भाषा विशिष्ट हो गई है।' इस कथन से आप कितना सहमत हैं? सिद्ध कीजिए।
2. संचार माध्यमों की भाषा के संदर्भ में वर्तनी की समस्या को उदाहरण सहित विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
3. संचार माध्यमों की भाषा के आदर्श रूप के बारे में आपके क्या विचार हैं? स्पष्ट कीजिए।
4. मुद्रित माध्यमों में शब्द और वाक्य-प्रयोग के वैशिष्ट्य को प्रस्तुत कीजिए।